पश्चिमी सिंहभूम जिला में हो जनजाति की सामाजिक - आर्थिक परिवेश : एक भौगोलिक विश्लेषण

शोध प्रारूप

पीएच.डी. पंजीयन हेतु

2023

विश्वविद्यालय, भूगोल विभाग

सामाज विज्ञान संकाय

रांची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशक

डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार सिंह

सहायक प्राध्यापक

भूगोल विभाग

रांची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

राजेंद्र ठाकुर

सहायक प्राध्यापक

टाटा कॉलेज, चाईबासा

शोधकर्ता का नाम एवं पता
राजेंद्र ठाकुर
वी.आई.पी. एरिया
टुंगरी, चाईबासा
पिन कोड 833201

(स्थाई पता)
राजेंद्र ठाकुर
पिता – डिलो ठाकुर
ग्राम – डूमर
पोस्ट – बेडम
थाना – टाटीझरिया
जिला – हजारीबाग
राज्य झारखंड
पिन कोड 825313
ई–मेल – rajendrathakur375@gmail.com
मोबाइल न० – 7667462214

शोध निर्देशक का नाम एवम् पताः–
डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
भूगोल विभाग
रांची विश्वविद्यालय, राँची

1.शोध शीर्षक

पश्चिमी सिंहभूम जिला में हो जनजाति की सामाजिक – आर्थिक परिवेश :एक भौगोलिक विश्लेषण

2. शोध विषय का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुत शोध का शीर्षक पश्चिमी सिंहभूम जिला में हो जनजाति की सामाजिक–आर्थिक परिवेश एक भौगोलिक विश्लेषण है। इसके अंतर्गत पश्चिम सिंहभूम जिला के हो जनजाति क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन करना, हो जनजाति के सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के प्रभाव का आकलन करना, उनके मूल संस्कृति के महत्व को उजागर करना। ब्रिटिश शासन के आगमन से पूर्व यह जनजाति प्राकृतिक संसाधनों के ऊपर स्वामित्व एवं प्रबंधन के निर्बाध अधिकारों का उपयोग करते थे। भारत में औद्योगीकरण की शुरुआत तथा खनिजों की खोज ने जनजातीय क्षेत्रों को बाहरी जगत के लिए खोल दिया। जनजातीय नियंत्रण का स्थान राजकीय नियंत्रण द्वारा ले लिया गया। आधुनिक विकास के कारको एवं गतिविधियों से जनजातीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसके सामाजिक–आर्थिक स्तर में परिवर्तन आया है तथा कई समस्याएं एवं चुनौतियाँ उभर कर सामने आई है। आधुनिक युग की खोज, उपभोगवाद पर आधारित है किंतु आदिम इतिहास के संदर्भ में जनजातियों का अध्ययन करना भी आधुनिक समाज की आवश्यकता है। पश्चिमी सिंहभूम जिला में हो जनजाति की अपनी एक विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक गतिविधियां हैं। भारत में हो जनजाति की सबसे बड़ी जनसंख्या झारखंड में पाई जाती है। "हो" शब्द की उत्पत्ति हो भाषा के 'होडोको' व 'होरो' से हुई है जिसका अर्थ मनुष्य है। हो समाज प्रोटो–आस्ट्रोलोयड प्रजातिय समूह में वर्गीकृत है तथा इसकी भाषा हो है। झारखंड में हो जनजाति का आगमन 600 ई. पू. में मुंडाओं के साथ हुआ था। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिला में हो जनजाति का सबसे ज्यादा संख्या पाई जाती है। इनके अलावे ओडिशा के क्योंझर, मयूरभंज, जाजपुर जिला में पाया जाता है ।

हो जनजाति का रहन–सहन, वेश–भूषा, खान–पान, कला, पर्व–त्योहार, धार्मिक मान्यता, सामाजिक व्यवस्था तथा आर्थिक क्रियाकलाप अपने आप में अनूठी है। समय के साथ इनमें जो परिवर्तन या बदलाव हुआ है इससे उनके मूल सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है तथा विकृत रूप ले रहा है। राज्य के आर्थिक व सांस्कृतिक विकास में हो जनजाति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यह शोध कार्य में पश्चिमी सिंहभूम जिला के अंतर्गत कुछ चयनित हो बहुल आबादी वाले प्रखंडों जैसे – चाईबासा, खूंटपानी, तांतनगर, झींकपानी, मंझारी, कुमारडूंगी तथा नोवामुंडी में उनका सामाजिक आर्थिक जीवन में आए परिवर्तन तथा उसके परिणाम से संबंधित है। जिससे हो जनजाति के विकास का विश्लेषण भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों के आधार पर किया जायेगा।

3.अध्ययन क्षेत्र के अध्यतन स्थिति

झारखंड जनजातीय आबादी के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ कुल 32 जनजातियाँ पाई जाती हैं, जिनकी संख्या 86,45,042 हैं। जो झारखंड की जनसंख्या का 26.2% हैं। इसमें एक प्रमुख जनजाति हो हैं जो यहाँ की चौथी सबसे बड़ी जनसंख्या वाली जनजाति है। समय के साथ–साथ इनके सामाजिक – आर्थिक जीवन में कई बदलाव व चुनौतियां आई है। मेरा शोध विषय का शीर्षक " पश्चिमी सिंहभूम जिले में हो जनजाति की सामाजिक - आर्थिक परिवेश : एक भौगोलिक विश्लेषण " हैं। इसके अंतर्गत प्राचीन समय से वर्तमान समय तक हो जनजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक जीवन की समस्याएं तथा चुनौतियों का अध्ययन सम्मिलित किए गए हैं।

जनजातियों को लेकर कई विद्वानों ने अपना योगदान दिए हैं–

बंकिरा सधुजन (2021) "हो जनजाति के प्राथमिक शिक्षा में स्तर" (ओडिशा)

इस शोध में इन्होंने उड़ीसा के क्योंझर, मयूरभंज तथा जाजपुर जिले में हो जनजाति के प्राथमिक शिक्षा स्तर पर समस्या एवं समाधान को उजागर किया है।

कुमार सोय (2019) ने अपने शोध पत्र **"राजनीति में हो समाज की भागीदारी"** का वर्णन इसमें इन्होंने हो समाज के लोगों का राजनीतिक में भागीदारी निम्म स्तर पर बताया है।

थॉमस मैरी माथा (1994), **"बिहार में हो समाज में महिलाओं का विकास में भागीदारी"**इस शोध में इन्होंने हो समाज के महिलाओं का घर व समाज के विकास में योगदान को उजागर किया हैं।

श्रुति कुजूर ने अपने शोध पत्र **"राँची नगर स्थित पूरवर्ती जनजातीय ग्रामों में सामाजिक, आर्थिक प्रतिरूप के बदलते स्वरूपः एक भौगोलिक अध्ययन"** में जनजातियों के बदलते समाज एक आर्थिक स्वरूप का मुख्य आधार जनजातियों के आर्थिक क्रियाकलाप को माना हैं।

रीना कुमारी ने अपने शोध पत्र **"झारखंड के आदिम जनजातियों की आर्थिक सामाजिक दशाएं तथा नूतन परिवर्तन: एक भौगोलिक अध्ययन"** में झारखंड के किसी भी समुदाय का सामाजिक और आर्थिक गतिविधियां एक दूसरे से परस्पर संबंधित माना है ।

प्रस्तुत शोध कार्य का भौगोलिक क्षेत्र पश्चिमी सिंहभूम जिला, भारत के झारखंड राज्य के दक्षिण भाग में कोल्हान प्रमंडल के अंतर्गत आता है। यह एक स्वतंत्र जिला के रूप में आने से पहले पुराने सिंहभूम जिले का हिस्सा हुआ करता था। 12 जनवरी 1990 को पुराने पश्चिमी सिंहभूम जिले को विभाजित करके एक नया जिला बनाया गयाए पूर्वी सिंहभूम इस तरह से पुराने सिंहभूम जिले का शेष हिस्सा पश्चिमी सिंहभूम जिले के रूप में अस्तित्व में आया। क्षेत्रफल के दृष्टिकोंण से पश्चिमी सिंहभूम जिला झारखंड का सबसे बड़ा जिला है तथा जनजातीय बाहुल्य जिला है तथा जिले का मुख्यालय चाईबासा है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 5,290 वर्ग किलोमीटर हैं। इसका अक्षांशीय विस्तार $21^{\circ}58'$ उतरी अक्षांश से $23^{\circ}36'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशांतरीय विस्तार 85° पू० से 86° 54' पूर्वी देशांतर तक है। यहाँ प्रखंडों की संख्या 18, नगरपालिका की संख्या 02, पंचायत की संख्या 1,069 अनुमंडल की संख्या 03 हैं। पश्चिमी सिंहभूम की कुल जनसंख्या 15.02 लाख है, जनसंख्या धनत्व :- 208 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। औसत साक्षरता 58.36% जिसमें पुरुष साक्षरता दर 71.13% तथा महिला साक्षरता दर 46.25 % हैं। यहां का लिंगानुपात 1,005 महिला प्रति हजार पुरुष है जो भारत एवं झारखंड के अपेक्षा अधिक एवम् सकारात्मक है। पश्चिमी सिंहभूम जिला का चौहदी इस प्रकार है – उत्तर में खूंटी व सरायकेला खरसावां जिला । दक्षिण में :- उड़ीसा का केंदुझर, मयूरभंज और सुंदरगढ़ जिला। पूर्व में :- सरायकेला खरसावां और उड़ीसा का मयूरभंज जिला तथा पश्चिम में :- सिमडेगा जिला और उड़ीसा का सुंदरगढ़ जिला स्थित है।

पश्चिमी सिंहभूम जिला को तीन अनुमंडल में बांटा गया है जो निम्न हैं पोड़ाहाट चक्रधरपुर, सदर चाईबासा और जगन्नाथपुर।

प्रखंड–

पोड़ाहाट चक्रधरपुर अनुमंडल के अंतर्गत कुल 7 प्रखंड आते हैं – चक्रधरपुर, बंदगांव, सोनुआ, गुदड़ी गोइलकेरा आनंदपुर मनोहरपुर। सदर चाईबासा अनुमंडल के अंतर्गत कुल 7 प्रखंड आते है- चाईबासा, खूंटपानी, टोंटो, हाटगमहरिया, तांतनगर, झिंकपानी, मंझारी।

जगन्नाथपुर अनुमंडल के अंतर्गत कुल 4 प्रखंड आते हैं :- नोवामुंडी, जगनाथपुर, मझगांव, कुमारडुंगी ।

4. शोध समस्या का विवरण

मानव भूगोल के अंतर्गत जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से संबंधित तथ्यों का पूर्णनिरीक्षण एवं उपलब्ध साहित्य की समीक्षा के आधार पर प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नलिखित समस्याएं है –

- समाजिक – आर्थिक विकास में हो जनजातियों के समक्ष गरीबी व्याप्त हैं।
- पश्चिमी सिंहभूम जिले में हो जनजातियों के बीच सामाजिक – आर्थिक विषमता।
- अध्ययन क्षेत्र की सामाजिक संरचना और जनसंख्या स्वरुप में असंतुलन।
- पश्चिमी सिंहभूम जिले की हो जातियों में सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियां में शिक्षा का अभाव।
- हो समाज के बीच गरीबी और अमीरों का खाई व्याप्त है।
- हो जनजाति भारतीय समाज के मुख्य धारा से कटा प्रतीत होता है।
- विस्थापन की समस्या।
- हो समाज के मूल सांकृतिक में गिरावट।
- भूमि अधिग्रहण की आदि

5. शोध कार्य के उदेश्य

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित है:-

- सामाजिक – आर्थिक स्थिति के निर्धारक तत्वो का अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र में हो जनजातियों के सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन करना।
- पश्चिमी सिंहभूम जिले में हो जनजातियों के समक्ष सामाजिक - आर्थिक विषमताओं का मुख्य कारकों का पता लगाना।
- हो जनजाति के सामाजिक - आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में प्रखंड स्तर पर क्षेत्रीय समस्याओं का अध्ययन करना तथा उन समस्याओं के समाधान हेतु नवीन ज्ञान विकास करना ।

- आधुनिक एवं विकास के साथ संस्कृति का संरक्षण करना ।
- पर्यावरण तथा हो समाज के बीच संतुलन स्थापित करना।
- भविष्य में हो जनजाति के समक्ष आने वाली सामाजिक - आर्थिक विकास की संभावनाओं का अध्यन करना।
- जिले में हो जनजातियों के समक्ष विकास हेतु प्रखंड एवम् ग्राम स्तर पर जागरूकता लाया जाना।

6. शोध परिकल्पना

- पश्चिमी सिंहभूम जिले में सामाजिक – आर्थिक विकास की सभी संभावनाएं मौजूद है।
- हो जनजातियों के सामाजिक – आर्थिक परिस्थिति में बदलाव आया है तथा सामाजिक आर्थिक समस्याओं के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ी है।
- जनजातियों के सामाजिक – आर्थिक विषमता के कारणों का उपचार की आवश्यकता है।
- शिक्षा द्वारा जनजातियों के सामाजिक – आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने की अपार संभावनाएं है।
- जनजातीय विकास को लेकर सरकार की योजनाओं के प्रति लोगों में जागरूकता लाकर विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं ।
- हो जनजाति के ऐतिहासिक, एवं आर्थिक स्वरुप के संबंध को नवीन माध्यम से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।
- सामाजिक–आर्थिक परिवेश पर एक भौगोलिक कारको का विशेष प्रभाव पड़ा है।

7. अनुसंधान की रूपरेखा तथा पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण उपागम विधि तंत्र को अपनाया जाएगा भौगोलिक प्रसंगों की तुलनात्मक व्याख्या हेतु भौगोलिक साहित्य के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व घार्मिक साहित्य से जुड़ी हुई सूचनाएं भी काम में ली गई है और आगे ली जाएगी।

शोध के लिए सूचना का प्रमुख स्रोत प्राथमिक एवं द्वितीयक होंगे जिसमें – सरकारी दस्तावेज, समाचार पत्र, झारखंड जनजातीय विभाग, सूचना केंद्र झारखंड के सामाजिक–आर्थिक से संबंधित पुस्तके, पत्रिकाएं, लेख, पर्यटन, आलेख, इंटरनेट एवं स्थानीय हो जनजाति के लोग, हो महासभा के अधिकारीगण एवं ह जनजातिय क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ एवं व्यक्तिगत लोगों से संपर्क आदि हैं जिसके आधार पर तत्कालीन सामाजिक – आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक के हर गतिविधियों का मूल्यांकन करना है। यह शोध कार्य विश्लेषणात्मक एवं वर्णात्मक प्रकृति का होगा।

शोध पद्धति

(क) क्षेत्र चयन**:-** अध्ययन का क्षेत्र झारखंड के दक्षिणी भाग में अवस्थित पश्चिमी सिंहभूम जिला है। जिले का गठन 1990 में हुआ, जिसका क्षेत्रफल 5,290 वर्ग किलोमीटर है। यह हो जनजातिय आबादी की दृष्टि से महत्वपूर्ण जिला है। क्षेत्र चयन में मुख्यत 02 प्रखंड है चाईबासा, खूँटपानी।

(ख) अध्ययन इकाई**:-** परिवार का मुखिया।

(ग) सूचना दाता का चयन**:-** शोध कार्य के लिए सूचना दाता के रूप में गांव के स्थानीय लोग तथा प्रमुख लोगों को जैसे मानकी, मुडा, नायके एवं सामाजिक लोगों के साथ–साथ जिला के जनजातीय विकास मंत्रालय, ग्रामीण उद्योग बोर्ड, कुटीर उद्योग बोर्ड, जनजातीय विकास संस्था के सभी कर्मी, पश्चिम सिंहभूम जिले के पदाधिकारी एवं जिला में स्थित आदिवासी हो महासभा के अधिकारियों का चयन किया जाएगा।

(घ) प्रतिदर्श का आकार**:-** शोध कार्य के लिए हो जनजातियों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास से संबंधित पश्चिमी सिंहभूम जिले के 02 प्रखंडों के चयनित गांव में सर्वेक्षण के लिए प्रतिदर्श

आकार के रूप में 20 से 30 परिवारों का चयन किया जाएगा। यह प्रखंड – चाईबासा तथा खूँटपानी है।

पश्चिमी सिंहभूम जिला के सभी प्रखंडों में हो जनजाति का निवास पाया जाता है परंतु उपरोक्त प्रखंडों को प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया है।

A. संभावित अध्यायीकरण

परिचय

- **प्रथम अध्याय:- भौगोलिक पृष्ठभूमि**
- **द्वितीय अध्याय:- एतिहासिक पृष्ठभूमि, जनसंख्या एवं जनांकिकीय** विशेषताएँ
- **तृतीय अध्याय:- सामाजिक – आर्थिक व्यवस्था पर भौगोलिक प्रभाव**
- **चतुर्थ अध्याय:- सामाजिक – आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन**
- **पंचम अध्याय:- संस्कृति, शिक्षा व स्वास्थय**
- **षष्ठ अध्याय:- पारंपरिक स्वाशासन व्यवस्था एवं चुनातियाँ**
- **सप्तम अध्याय:- जनजातीय विकास हेतु संचालित सरकारी एवम् गैर सरकारी योजनाएं एवं प्रभाव**
- **अष्ठम अध्याय:- समस्याएं एवं विकास की संभावनाएं**

उपसंहार
संदर्भग्रंथ सूची
परिशिष्ट

9. आंकड़ा विश्लेषण

आंकड़ा प्रसंस्करण और विश्लेषण के लिए ग्राफ के साथ संगणक विधि का प्रयोग किया जाएगा आकड़ों का विश्लेषण तालिकाबद्ध रूप से किया जाएगा तथा आलेख विधियों का प्रयोग में लाया जाएगा।

10. अध्यन का महत्व

भारत में आम तौर पर जनजातियों को देश का मूल निवासी माना जाता है। भारत के संविधान का अनुच्छेद 342 में जनजातियों की परिभाषा का उल्लेख किया गया है। भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का पाया जाना हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। भारत में जनजातियों के कुल जनसंख्या लगभग 26 करोड़ है 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी का 24.4% है। भारत में लगभग 700 आदिम जनजाति को अनुसूचित जनजाति किस श्रेणी में दर्जा प्राप्त है या जातिया अधिकांशत ग्रामीण एवं सुदूर पहाड़ी क्षेत्र में जीवन यापन करने के लिए बाध्य है तथा भारतीय समाज की प्रगति की मुख्यधारा से वंचित है परंतु उसके सामाजिक सास्कृतिक और आर्थिक सुधार हेतु केंद्रीय एवं राज्य सरकारें अधिक सक्रिय एवं संवेदनशील हो चुकी है। इन जातियों का मुख्य पेशा व आर्थिक क्रियाकलाप कृषि एवं पशुपालन है तथा प्रत्येक जनजाति के विभिन्न सांस्कृतिक पाए जाते हैं। भारत के विकास में अनुसूचित जनजातियों का महत्व कम थी परंतु भारत के आजादी के बाद इसका योगदान अग्रसर है किसी भी राष्ट्र का विकास में एकरूपता अति आवश्यक है। प्रस्तावित अध्यन पश्चिमी सिंहभूम जिला के हो जनजाति के सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक विकाश के परिपेक्ष में विश्लेषण का प्रयास है पश्चिमी सिंहभूम जिले के सभी प्रखंड में अनेक जनजाति पाए जाते हैं जिसमें हो जनजाति प्रमुख हैं। झारखंड में संथाल, उरांव तथा मुंडा के बाद चौथे स्थान पर हो जनजाति पाई जाती है। हो जनजाति का अपना धार्मिक कर्मकांड, सामाजिक आचार-विचार एवं वेशभूषा पाया जाता है। हो जनजाति के खास व्यंजन लेटो मांडी और पोडोम जीलु है वह सागसब्जियां, कंदमूल और मांस खाते है। हो जनजाति स्थाई कृषक होते हैं इनके खेती भूमि को तीन भागों में बाटा गया है। (अ) बाड़ी भूमि– घर से सटे आसपास की भूमि को जिसमें यह मुख्य रूप से सब्जी उगाते हैं। (ब) दोन भूमि– यह सबसे उपजाऊ और निचली भूमि है जिसमें यह धान उगाते है। (स) टांड भूमि– उच्च भूमि है जो अपेक्षाकृत कम उपजाऊ होते हैं, मुख्य रूप से इस पर दाल की खेती की जाती है जैसे चना, अरहर, कुलथी। उनके निवास स्थान के आसपास लोहे के खान अधिक होने के कारण इसकी बड़ी आबादी लोहे की खान में

मजदूर का काम करते हैं। जीविका उपार्जन के लिए ये वन उत्पाद संग्रह, शिल्पकार, पशुपालन, शिकार करना, मजदूरी करते हैं। इसके माध्यम से राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

मेरे इस शोध कार्य से अध्ययन क्षेत्र पश्चिमी सिंहभूम जिले में हो जनजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास की जानकारी जनसंख्याविद, योजनाकर्ता, शोधकर्ताओं के लिए एवं जनजातियों विकास के लिए उपयोगी होगा तथा मानव हित के लिए उन्हें जनजातीय विकास से संबंधित जानकारी प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

11. वर्तमान समय की समस्या तथा समाज की आवश्यकता हेतु इसकी प्रासंगिकता

पश्चिमी सिंहभूम जिले में हो जनजाति के बीच जो समस्याएँ हैं उन्हें उजागर करना उनके जीवन को उचित समन्वय के साथ किस तरह से विकसित किया जा सकता है इस पर प्रस्तुत अध्ययन प्रकाश डालता है। ऐसा अध्ययन जनजाति विकास से जुड़े अधिकारियों नीति निर्माताओं के कार्यों को सरल बना सकता है साथ ही जनजाति लोगों को जीवन को आसान बनाता है। हो जनजाति के बीच समाज में आर्थिक असमानता व्याप्त है बहुत से परिवार धनाढय एवं भौतिक सुख सुविधा जीवन यापन कर रहे हैं तो बहुत ऐसे परिवार हैं जो एक पेट भोजन के लिए तरस रहे हैं। वर्तमान समय में भारत सरकार एवं झारखंड सरकार ने योजनाबद्ध तरीकों से जातियों के विकास के लिए अनेक प्रयास किए हैं इसके बावजूद इसके विकास में बाधा आ रहे हैं। इनकी समस्याओं की पहचान करने के अलावा विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक गतिविधियों के जरिए इनके निवारण का रास्ता भी तैयार करने की आवश्यकता है ताकि भागीदारी पर आधारित और प्रबंधित विकास प्रक्रिया से अनुसूचित जनजातियों को सशक्तिकरण संभव हो सके तथा परिवर्तनशील और प्रतिस्पर्धा दुनिया में यह आगे कदम से कदम मिलकर चल सके। पश्चिमी सिंहभूम जिला खानिज संपदा से परिपूर्ण होने के बावजूद यहां हो जनजाति की विकास की दशा वांछनीया नहीं है अतः यह शोध के जरिए इन में सकारात्मक बदलाव अवश्य आएगी।

12. वर्तमान ज्ञान में योगदान

पश्चिमी सिंहभूम जिले के हो जनजाति के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जानकारी राज्य तथा देश स्तर पर उजागर करना। वर्तमान समय में हम देखते हैं कि पश्चिमी सिंहभूम जिला क्षेत्रफल में सबसे बड़ा होने के साथ खनिज संपदा, वन संपदा में समृद्ध होने के बावजूद भी वहां की हो जनजाति क्षेत्र काफी पिछड़े हुए हैं। आदिवासी समाज में जागरूकता का काफी अभाव है जिस कारण सरकार द्वारा आदिवासियों के लिए बनाई गई कई सारी योजनाएं उन तक पहुंच ही नहीं पाती और उनकी स्थिति अन्य वर्गों की तुलना में बेहतर नहीं हो पाती। आदिवासियों की स्थिति बेहतर ना होने के पीछे कई सारे कारण जिम्मेवार है साथ ही कुछ शिक्षित व जागरूक लोग है तो मत्स्य न्याय की भूमिका निभाते है अर्थात् सभी योजनाओं का लाभ पाते हैं जिसके कारण हो समुदाय में आर्थिक, सामाजिक असमानता की खाई काफी गहरी देखने को मिलती है। भविष्य में निर्धारित कार्य के अंतर्गत हम इन कारणों का पता लगाकर हो जनजाति में जागरूकता को बढ़ाकर उनकी स्थिति को बेहतर कर सकते हैं जिससे भविष्य में उनके आर्थिक, सामाजिक विकास की संभावना बनी रहेंगी।

13. भविष्य के कार्य

इस शोध के माध्यम से भविष्य में निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध कार्य किए जा सकते हैं –

- हो समाज में आर्थिक विकास के क्षेत्र में
- हो समाज में सामाजिक परिवर्तन क्षेत्र में
- हो जनजातियों के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं को अन्य जनजाति के साथ तुलनात्मक क्षेत्र में
- हो समुदाय के बीच सामाजिक, आर्थिक असमानता के क्षेत्र में
- जिले के अन्य समुदाय के साथ ही जनजाति का तुलनात्मक अध्यन

14. संबंधित संदर्भ

- सिंह पूर्णिमा शेखर, गौन्तिया आर., 2010 "मानव एवम् जनसंख्या भूगोल" नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पृष्ठ संख्या–1
- कुमार, सोय 2019– "राजनीति में हो समाज की भागीदारी" ओडिशा के संदर्भ में, पृष्ठ संख्या – 37
- मारथा, मेरी थोमस 1994– "रोल ऑफ हो वुमेन्स इन डिसीजन मेकिंग ऑफ होम इन बिहार" पृष्ठ संख्या– 93
- सेन, कुमार अशोक, 2011 "द हो ऑफ सिंहभूम अंडर कोलोनियल रूल" कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी पृष्ठ संख्या– 73 से 74
- साधुजन, बंकिरा 2021 "प्राथमिक शिक्षा में हो जनजाति के बच्चों का भागीदारी" ओडिशा राज्य संदर्भ में, पृष्ठ संख्या– 19
- कुमारी, रीना 2019 "झारखंड के आदिम जनजातियों के आर्थिक सामाजिक दशाएं तथा नूतन परिवर्तन: एक भौगोलिक अध्ययन" रांची विश्वविद्यालय, रांची, पृष्ठ संख्या–170 से 173

- Ministry of tribal affairs goverment of india:&https://tnbal-nic-in
- Jharkhand Census: https://www-censusindia-co-in/state/jharkhand
- https://www-deshbandhucollege-ac-in
- https://www-m-wikipedea-org
- https://trifed-tribal-gov-in/jharkhand
- https://okworldguru.com